

पञ्चमः पाठः



## धर्मे धमनं पापे पुण्यम्

['धर्मे धमनं पापे पुण्यम्' (धरम में धक्का, पाप में पुण्य) मध्यप्रदेश के डिण्डोरी ज़िले में परधानों के बीच प्रचलित लोककथा है। यह कथा पञ्चतन्त्र की शैली में रचित है। इस कथा में यह स्पष्ट किया गया है कि संकट में पड़ने पर भी चतुराई एवं प्रत्युत्पन्नमत्तित्व से उससे निकला जा सकता है।]

ऋकारान्त-स्त्रीलिङ्गः

आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविकां निर्वाहयति स्म॥ एकदा सः वने जालं विस्तीर्य गृहम् आगतवान्। अन्यस्मिन् दिवसे प्रातःकाले यदा चञ्चलः वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः बद्धः आसीत्। सोऽचिन्तयत्, 'व्याघ्रः मां खादिष्यति अतएव पलायनं करणीयम्।' व्याघ्रः न्यवेदयत्-'भो मानव! कल्याणं भवतु ते। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि।' तदा सः व्याधः व्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्। व्याघ्रः क्लान्तः आसीत्। सोऽवदत्, 'भो





मानव! पिपासुः अहम्। नद्याः जलमानीय मम पिपासां शमय।  
व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः व्याधमवदत्, 'शान्ता मे पिपासा।  
साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।'   
चञ्चलः उक्तवान्, 'अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान्।  
त्वया मिथ्या भणितम्। त्वं मां खादितुम् इच्छसि?

व्याघ्रः अवदत्, 'अरे मूर्ख! धर्मे धमनं पापे पुण्यं  
भवति एव। पृच्छ कमपि।'

चञ्चलः नदीजलम् अपृच्छत्।  
नदीजलम् अवदत्, 'एवमेव भवति, जनाः  
मयि स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति  
तथा च मल-मूत्रादिकं विसृज्य निवर्तन्ते,  
अतः धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव।'

चञ्चलः वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्।  
वृक्षः अवदत्, 'मानवाः अस्माकं छायायां  
विरमन्ति। अस्माकं फलानि खादन्ति, पुनः  
कुठारैः प्रहत्य अस्मभ्यं सर्वदा कष्टं ददति।  
यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति। धर्मे धमनं पापे  
पुण्यं भवति एव।'



समीपे एका लोमशिका बदरी-गुल्मानां  
पृष्ठे निलीना एतां वार्तां शृणोति स्म। सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य  
कथयति-“का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय।” सः अवदत्-“अहह मातृस्वसः! अवसरे  
त्वं समागतवती। मया अस्य व्याघ्रस्य प्राणाः रक्षिताः, परम् एषः मामेव खादितुम्  
इच्छति।” तदनन्तरं सः लोमशिकायै निखिलां कथां न्यवेदयत्।

लोमशिका चञ्चलम् अकथयत्-बाढम्, त्वं जालं प्रसारय। पुनः सा व्याघ्रम् अवदत्-केन प्रकारेण त्वम् एतस्मिन् जाले बद्धः इति अहं प्रत्यक्षं द्रष्टुमिच्छामि।



व्याघ्रः तद् वृत्तान्तं प्रदर्शयितुं तस्मिन् जाले प्राविशत्। लोमशिका पुनः अकथयत्-सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय। सः तथैव समाचरत्। अनारतं कूर्दनेन सः श्रान्तः अभवत्। जाले बद्धः सः व्याघ्रः क्लान्तः सन् निःसहायो भूत्वा तत्र अपतत् प्राणभिक्षामिव च अयाचत। लोमशिका व्याघ्रम् अवदत् 'सत्यं त्वया भणितम्'

धर्मे धमनं पापे पुण्यम् तु भवति एव।' जाले पुनः तं बद्धं दृष्ट्वा सः व्याधः प्रसन्नो भूत्वा गृहं प्रत्यावर्तत।



|                        |   |                                   |
|------------------------|---|-----------------------------------|
| धमनम्                  | - | धौंकना, धक्का, क्रूरतापूर्ण कार्य |
| व्याधः                 | - | शिकारी, बहेलिया                   |
| स्वीयाम्               | - | स्वयं की                          |
| दौर्भाग्यात्           | - | दुर्भाग्य से                      |
| बद्धः                  | - | बँधा हुआ                          |
| पलायनम्                | - | पलायन करना, भाग जाना              |
| न्यवेदयत् (नि+अवेदयत्) | - | निवेदन किया                       |
| मोचयिष्यसि             | - | मुक्त करोगे/छुड़ाओगे              |

धर्मे धमनं पापे  
पुण्यम्

|                         |   |                        |
|-------------------------|---|------------------------|
| निरसारयत् (निः+असारयत्) | - | निकाला                 |
| क्लान्तः                | - | थका हुआ                |
| पिपासुः                 | - | प्यासा                 |
| शमय                     | - | शान्त करो/मिटाओ        |
| बुभुक्षितः              | - | भूखा                   |
| भणितम्                  | - | कहा                    |
| प्रक्षालयन्ति           | - | धोते हैं               |
| विसृज्य                 | - | छोड़कर                 |
| निवर्तन्ते              | - | चले जाते हैं/लौटते हैं |
| उपगम्य                  | - | पास जाकर               |
| विरमन्ति                | - | विश्राम करते हैं       |
| कुठारैः                 | - | कुल्हाड़ियों से        |
| प्रहत्य                 | - | प्रहार करके            |
| छेदनम्                  | - | काटना                  |
| लोमशिका                 | - | लोमड़ी                 |
| निलीना                  | - | छुपी हुई               |
| उपसृत्य                 | - | समीप जाकर              |
| मातृस्वसः!              | - | हे मौसी                |
| समागतवती                | - | पधारी/आई               |
| निखिलाम्                | - | सम्पूर्ण, पूरी         |
| बाढम्                   | - | ठीक है, अच्छा          |

|                               |   |                      |
|-------------------------------|---|----------------------|
| प्रत्यक्षम्                   | - | अपने (समक्ष) सामने   |
| वृत्तान्तम्                   | - | पूरी कहानी           |
| प्रदर्शयितुम्                 | - | प्रदर्शन करने के लिए |
| प्राविशत् (प्र+अविशत्)        | - | प्रवेश किया          |
| कूर्दनम्                      | - | उछल-कूद              |
| अनारतम्                       | - | लगातार               |
| श्रान्तः                      | - | थका हुआ              |
| प्रत्यावर्तत (प्रति+आ+अवर्तत) | - | लौट आया              |

### अभ्यासः



#### 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) व्याधस्य नाम किम् आसीत्?
- (ख) चञ्चलः व्याघ्रं कुत्र दृष्टवान्?
- (ग) विस्तृते जाले कः बद्धः आसीत्।
- (घ) बदरी-गुल्मानां पृष्ठे का निलीना आसीत्?
- (ङ) अनारतं कूर्दनेन कः श्रान्तः अभवत्?

#### 2. संस्कृतेन उत्तरत-

- (क) चञ्चलेन वने किं कृतम्?
- (ख) व्याघ्रस्य पिपासा कथं शान्ता अभवत्?
- (ग) जलं पीत्वा व्याघ्रः किम् अवदत्?
- (घ) चञ्चलः 'मातृस्वसः!' इति कां सम्बोधितवान्?
- (ङ) जाले पुनः बद्धं व्याघ्रं दृष्ट्वा व्याधः किम् अकरोत्?



### 3. अधोलिखितानि वाक्यानि कः/का कं/कां प्रति कथयति-

यथा - इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।

(क) कल्याणं भवतु ते।

(ख) जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति।

(ग) अरे मूर्ख! धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव।

(घ) यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति।

(ङ) सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय।

कः/का

कं/कां

व्याघ्रः

व्याधम्

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

### 4. सन्धिं कृत्वा लिखत-

मृग + आदीनाम् = .....

तथा + एव = .....

कुत्र + अपि = .....

बुभुक्षितः + अस्मि = .....

प्रति + आ + अवर्तत = .....

### 5. उदाहरणानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

|                    | एकवचनम् | द्विवचनम्  | बहुवचनम् |
|--------------------|---------|------------|----------|
| यथा- मातृ (प्रथमा) | माता    | मातरौ      | मातरः    |
| स्वसृ (प्रथमा)     | .....   | .....      | .....    |
| मातृ (तृतीया)      | मात्रा  | मातृभ्याम् | मातृभिः  |
| स्वसृ (तृतीया)     | .....   | .....      | .....    |
| स्वसृ (सप्तमी)     | स्वसरि  | स्वस्रोः   | स्वसृषु  |
| मातृ (सप्तमी)      | .....   | .....      | .....    |

|               |        |          |           |
|---------------|--------|----------|-----------|
| स्वसृ (षष्ठी) | स्वसुः | स्वस्रोः | स्वसृणाम् |
| मातृ (षष्ठी)  | .....  | .....    | .....     |

## 6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथां पूरयत-

|            |          |          |           |          |
|------------|----------|----------|-----------|----------|
| दृष्ट्वा   | स्वकीयैः | कृतवान्  | कर्तनम्   | वृद्धः   |
| साट्टहासम् | तर्हि    | क्षुद्रः | मोचयितुम् | अकस्मात् |

एकस्मिन् वने एकः ..... व्याघ्रः आसीत्। सः एकदा व्याधेन विस्तारिते जाले



बद्धः अभवत्। सः बहुप्रयासं ..... किन्तु जालात् मुक्तः

नाभवत्। ..... तत्र एकः मूषकः समागच्छत्। बद्धं व्याघ्रं

..... सः तम् अवदत्-अहो! भवान् जाले बद्धः। अहं

त्वां ..... इच्छामि। तच्छ्रुत्वा व्याघ्रः ..... अवदत्-अरे!

त्वं ..... जीवः मम सहाय्यं करिष्यसि। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि

..... अहं त्वां न हनिष्यामि। मूषकः ..... लघुदन्तैः

तज्जालस्य ..... कृत्वा तं व्याघ्रं बहिः कृतवान्।

## 7. धातुं प्रत्ययं च लिखत-

|              |   |       |          |
|--------------|---|-------|----------|
| पदानि        | = | धातुः | प्रत्ययः |
| यथा- गन्तुम् | = | गम्   | + तुमुन् |
| द्रष्टुम्    | = | ..... | + .....  |



|          |   |       |   |       |
|----------|---|-------|---|-------|
| करणीय    | = | ..... | + | ..... |
| पातुम्   | = | ..... | + | ..... |
| खादितुम् | = | ..... | + | ..... |
| कृत्वा   | = | ..... | + | ..... |

### योग्यता-विस्तारः

**परधान और उनकी कलापरम्परा**-परधान मुख्यतः गोंड राजाओं की वंशावली और कथा के गायक थे। गोंड राज्य के समाप्त होने पर ये गायक अपनी गायी जाने वाली कथाओं पर चित्र बनाने लगे। इस समुदाय की कथाओं और चित्रकला के बारे में और अधिक जानने के लिए पुस्तक 'जनगढ़ कलम' (वन्या प्रकाशन, भोपाल) देखी जा सकती है। प्रस्तुत कथा के संकलन-कर्ता हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री उदयन वाजपेयी हैं।

लोककथाओं में जीवन की रंग-बिरंगी तस्वीर मिलती है। दिलचस्प बात यह है कि लोककथाएँ किसी एक भाषा या इलाके तक सीमित नहीं रहतीं। उन्हें कहने वाले जगह-जगह घूमते हैं इसलिए रूप और वर्णन में हेरफेर के साथ दूसरी जगहों में भी मिल जाती हैं। क्षेत्र विशेष की संस्कृति की झलक उनको अनूठा बनाती है। स्थान और काल के अनुसार लोककथाओं की नई-नई व्याख्याएँ होती रहती हैं। इस क्रम में उनमें परिवर्तन भी होता है।

